# अतिरिक्त भाग

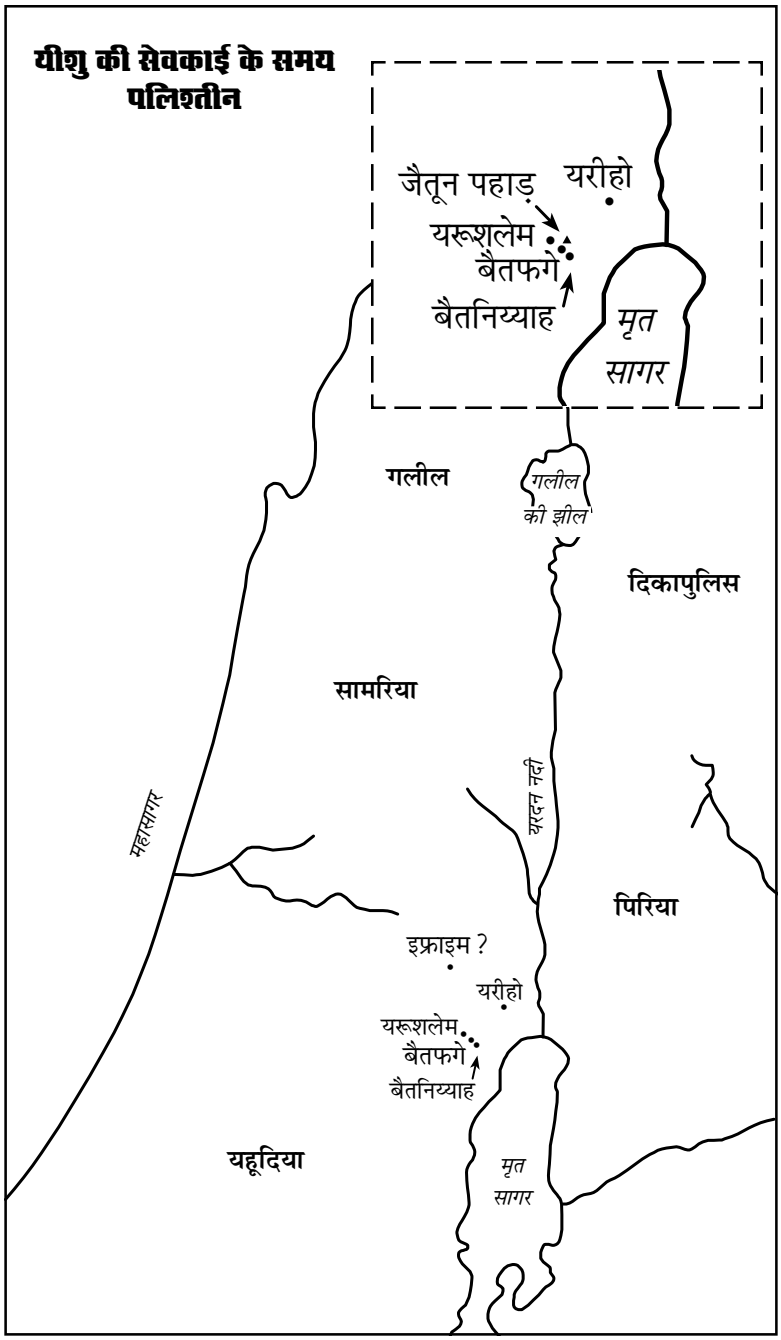
यीशु की सेवकाई के समय
पलिश्तीन
जैतून पहाड़
यरीहो
यरूशलेम
बैतफगे
बैतनिय्याह
मृत
सागर
गलील
गलील
की झील
दिकापुलिस
सामरिया
महासागर
यरदन नदी
पिरिया
इफ्राइम ?
यरीहो
यरूशलेम
बैतफगे
बैतनिय्याह
यहूदिया
मृत
सागर

# यीशु और/या पवित्र शास्त्र

यीशु और पवित्र शास्त्र के बारे में हाल ही में एक विवाद उठ खड़ा हुआ है। कुछ लोगों का दावा है कि हमारा व्यवहार ''यीशु को तो हां पर पवित्र शास्त्र को न'' होना चाहिए। क्या यह हो सकता है कि यीशु को स्वीकार करके हम पवित्र शास्त्र को नकार दें? क्या यीशु को पवित्र शास्त्र से अलग किया जा सकता है?

## यीशु बनाम पवित्र शास्त्र

सच्चाई की कुछ बातों पर कुछ विवाद खड़े होते हैं, पर अन्त में वे सच्चाई में बिगाड़ का कारण बनते हैं। सच है कि हमें यीशु की आराधना करनी है, न कि पवित्र शास्त्र की। यीशु को हमारे मन में उच्च स्थान मिलना आवश्यक है। वही है जिसे स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है (मत्ती 28:18)। हर घुटने का उसके आगे झुकना और उसका अंगीकार करना आवश्यक है (फिलिप्पियों 2:9-11)। पवित्र शास्त्र के प्रति ऐसी श्रद्धा की आवश्यकता नहीं है।

पवित्र शास्त्र को ऊंचा उठाने की आवश्यकता नहीं है। पवित्र आत्मा पर भी यही बात लागू होती है, जिसने पवित्र शास्त्र को प्रकट किया है। सच्चाई के आत्मा के लिए जिसने सब सत्य में प्रेरितों की अगुआई करनी थी (यूहन्ना 16:13), यीशु ने कहा, ''वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा'' (यूहन्ना 16:14)। आत्मा के द्वारा दिया गया प्रकाशन यीशु की महिमा के लिए था, न कि आत्मा की महिमा या आत्मा द्वारा दिए गए पवित्र शास्त्र की महिमा के लिए। आत्मा या पवित्र शास्त्र को यीशु से अधिक महत्व देने का अर्थ यीशु को वह महिमा न देना है, जिसका वह अधिकारी है।

## यीशु और पवित्र शास्त्र

पवित्र शास्त्र आवश्यक है क्योंकि उससे हमें यीशु के बारे में पता चलता है और उसमें उसकी शिक्षा है। बिना पवित्र शास्त्र के हमें (1) यीशु का कोई ज्ञान, (2) भविष्यवाणी का कोई सबूत कि यीशु ही मसीह है, (3) यह विश्वास दिलाने के लिए कि वह ही परमेश्वर का पुत्र है, कोई आश्चर्यकर्म, (4) हमारे विश्वास का कोई आधार, (5) उसके पीछे चलने के लिए उसके जीवन का कोई उदाहरण, और (6) उद्धार पाने के लिए सीखने की कोई योग्यता न मिलती।

## पवित्र शास्त्र के बिना यीशु का कोई ज्ञान नहीं

फिलिप्पुस की मुलाकात इथियोपिया के मंत्री से हुई जो पवित्र शास्त्र में से पढ़ रहा था। उस हब्शी ने यशायाह 53:7, 8 के शब्दों पर एक प्रश्न पूछा, और फिलिप्पुस ने उसे

यीशु के विषय में बताया। कैसे ? ''तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया'' (प्रेरितों 8:35)। फिलिप्पुस का उस हब्शी को सिखाने का ढंग उसे पवित्र शास्त्र को समझाना था।

## पवित्र शास्त्र की भविष्यवाणी साबित करती है कि यीशु ही मसीह है

यीशु ने सिखाया कि पवित्र शास्त्र उसके विषय में बताता है। उसने यहूदियों को बताया, ''तुम पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है; और यह वही है जो मेरी गवाही देता है'' (यूहन्ना 5:39)। यीशु ने पवित्र शास्त्र के बारे में प्रेरितों की समझ खोल दी। उसने उन्हें दिखाया कि उसने किस प्रकार मूसा की व्यवस्था, भविष्यवक्ताओं और भजनों की बातों को पूरा किया था (लूका 24:44, 45)। पिन्तेकुस्त के दिन, यह साबित करने के लिए कि यीशु ने भविष्यवाणी को पूरा कर दिया है, पतरस ने पवित्र शास्त्र में से उद्धृत किया (प्रेरितों 2:25-36)।

लोगों को यीशु को मसीह मानने के लिए विश्वास दिलाने के लिए पौलुस पवित्र शास्त्र की भविष्यवाणियों का ही इस्तेमाल करता था। ''और पौलुस अपनी रीति के अनुसार उन के पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्र शास्त्रों से उन के साथ विवाद किया और उनका अर्थ खोल-खोलकर समझाता था, कि मसीह को दुख उठाना, और मरे हुओं में से जी उठना, आवश्यक था; और यही यीशु, जिस की मैं तुम्हें कथा सुनाता हूं, मसीह है'' (प्रेरितों 17:2, 3)। अपुल्लोस भी इसी तरह पवित्र शास्त्र का इस्तेमाल करता था (प्रेरितों 18:28)।

## यीशु के आश्चर्यकर्म प्रमाण के लिए लिखे गए

पवित्र शास्त्र के बिना, हमारे पास यह सबूत न होता कि यीशु ही मसीह है। परमेश्वर ने यीशु द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों के द्वारा यीशु के उसे स्वीकार होने को दिखाया (प्रेरितों 2:22)। ये आश्चर्यकर्म इसलिए लिखे गए थे कि हम यीशु को मसीह मानें। ''यीशु ने और भी बहुत चिह्न चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ'' (यूहन्ना 20:30, 31)।

## पवित्र शास्त्र यीशु में विश्वास लाने का आधार है

यीशु में हमारा विश्वास प्रकट किए गए वचन के आधार पर है। यीशु ने उनके लिए प्रार्थना की, जिन्होंने प्रेरितों के वचन के द्वारा उस पर विश्वास लाना था। विश्वास परमेश्वर के वचन के द्वारा आता है। बिरिया के लोग विश्वास लाए क्योंकि ''उन्होंने बड़ी लालसा के साथ वचन ग्रहण किया और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं'' (प्रेरितों 17:11, 12)। बिना पवित्र शास्त्र के हम यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते थे कि यीशु ही मसीह है।

## यीशु के जीवन से हमारे लिए नमूना दिया गया

पवित्र शास्त्र न केवल यह प्रमाण देता है कि यीशु ही मसीह है ताकि हम उसमें विश्वास ला सकें, बल्कि उसमें यीशु के जीवन के बारे में भी बताया गया है जिससे हम अपने नमूने के रूप में उसका अनुकरण कर सकें। ''जो कोई यह कहता है कि मैं उसमें बना रहता हूं, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था'' (1 यूहन्ना 2:6)। बिना पवित्र शास्त्र के, हमें पता नहीं चल सकता था कि उसका जीवन कैसा था, यानी हमें अपने जीवन उसके अनुसार चलाने का पता न चलता।

## उद्धार का ज्ञान पवित्र शास्त्र के द्वारा

पवित्र शास्त्र हमारे उद्धार के कर्त्ता, यीशु को दिखाता है, बिना उसके हमें पता नहीं चल सकता था कि उद्धार कैसे पाया जा सकता है। यदि हमारा उद्धार पवित्र शास्त्र के बिना हो सकता, तो बिना यीशु को जाने हम उद्धार पा सकते थे। पवित्र शास्त्र ही यीशु के विषय में जानकारी देने का एकमात्र आधारात्मक स्रोत है। यही कारण है कि पवित्र शास्त्र में हमें उद्धार पाने के लिए बुद्धिमान बनाने की क्षमता है। पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा था कि पवित्र शास्त्र उसे ''उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है'' (2 तीमुथियुस 3:15)।

पवित्र शास्त्र में परमेश्वर का वचन है, जो बताता है कि उद्धार पाने के लिए क्या करना आवश्यक है (प्रेरितों 11:14; 1 कुरिन्थियों 5:2), पाप से स्वतन्त्रता दिलाता है (यूहन्ना 8:31, 32), इसमें मेल-मिलाप का संदेश है (2 कुरिन्थियों 5:19), पवित्र करने का स्रोत है (यूहन्ना 17:17), हमें मिरास देता है (प्रेरितों 20:32), और नये जन्म का आधार है (1 पतरस 1:23)।

## सारांश

हम यीशु और पवित्र शास्त्र में से किसी एक को नहीं चुन सकते क्योंकि हमें दोनों की आवश्यकता है। बिना पवित्र शास्त्र के न तो हम यीशु को और न उसके बारे में जान सकते हैं। हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर का वचन आवश्यक है: यदि पवित्र शास्त्र यीशु के विषय में न बताता तो हम अनन्त काल के लिए नाश हो जाते।

पवित्र शास्त्र की उपेक्षा करने वाले उस बात को नकारते हैं जिसकी परमेश्वर ने प्रेरणा दी और मनुष्य जाति पर प्रकट किया है (2 तीमुथियुस 3:16)। केवल पवित्र शास्त्र का अध्ययन करने से ही ''परमेश्वर का जन सिद्ध ... और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो'' सकता है (2 तीमुथियुस 3:17)। पवित्र शास्त्र को आवश्यक मानने वाले हमारी आशा (रोमियों 15:4) अर्थात स्वर्ग में जीवन की आशा को लूटते हैं (1 पतरस 1:3, 4)।

ओवन डी. ऑल्बर्ट